Ss-4

RNI No. UPHIN / 2012 / 45466
ISSN 2456-8775
APPROVED BY UGC

अप्रैल - जून 2019 मूल्य 25/- प्रति

शीतल वाणी

साहित्य की शीतलता और
जीवन की जीवंतता का मंत्र

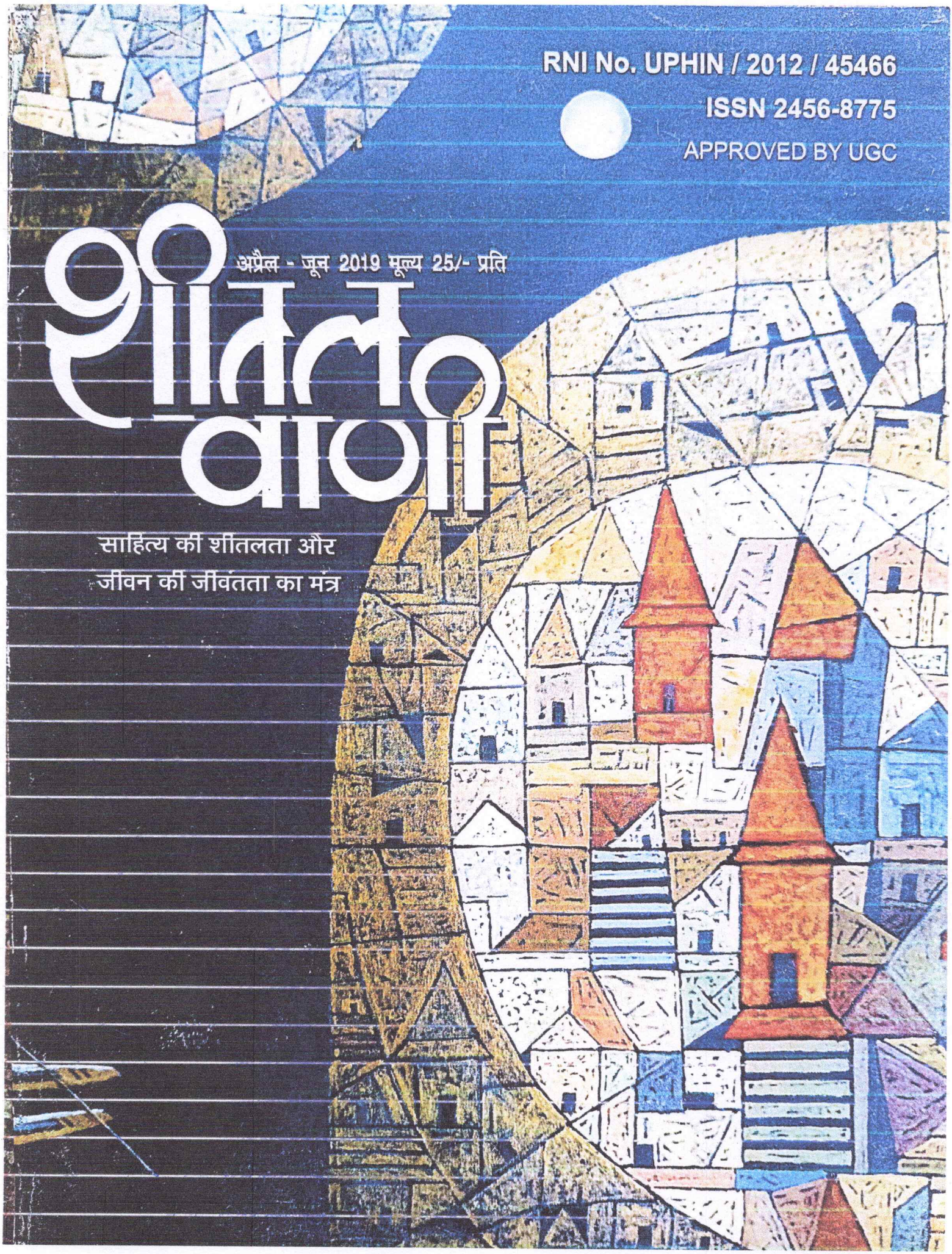

शीतल वाणी

हिन्दी त्रैमासिक

अनुक्रम

अपनी बात

आओ हम भी पानी का हिसाब रखें! / 1

संस्मरण

ये थी खबरें आज तक .... डॉ. वीरेन्द्र आजम / 3

साक्षात्कार

विचारधारा के बिना आदमी और केंचुए ...जयनंदन / 5

कहानी

फालतू कोना डॉ. हंसा दीप / 11

वसीयत देवी नागरानी / 14

भात नसीम साकेती / 19

लघुकथा – रिक्शेवाला सुरेश सौरभ / 43

साहित्यिक विमर्श

निरंजन श्रोत्रियः युवा कविता .... रोहित कौशिक / 23

पत्रिकाएँ मिलीं / 35

गीत / ग़ज़ल / कविताएँ

अशोक अंजुम की चार ग़ज़लें / 25

नवीन माथुर पंचोली की तीन ग़ज़लें / 77

डॉ. शिव कुशवाहा की तीन कविताएँ / 26

अनुभूति गुप्ता की तीन कविताएँ / 53

डॉ. बी. के. मिश्र के तीन गीत / 27

हाइकु – धर्मपाल महेंद्र जैन / 50

दोहे – राजेश जैन राही / 91

शिवानंद सिंह सहयोगी की तीन कुंडलियाँ / 88

पुस्तक समीक्षा

कालजयी और कालजीवी हैं अनु के गीत अवनीन्द्र कमल / 28

नैतिकता के समर्थन में खड़ी कहानियाँ कृष्ण सुकुमार / 29

शोध आलेख

अब हम कातबि चरखवा डॉ. महीपाल सिंह राठौड़ / 30

मिथक काव्य के परिप्रेक्ष्य.... डॉ. ममता शर्मा गोडबोले / 32

तुलसी का रामराज्य आदित्य चतुर्वेदी / 36

दलित साहित्य विमर्श और राजपाल .... डॉ. रवि रंजन / 40

प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' .... चौहान हेतलबहेन / 44

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शैलियाँ डॉ. शीरीन सलीम / 47

तुलसी युगीन सामाजिक गणार्श हरिओम कुमार द्विवेदी / 51

सोशल मीडिया में हाशिए के स्वर अविनाश कुमार / 54

नरेश मेहता : आधुनिक हिंदी कविता ..... मयंक /57

दरबारी काव्य का प्रतिपक्ष और नज़ीर.... निवेदिता प्रसाद / 64

कुबेरनाथ राय की लोकचेतना डॉ. शीरीन सलीम / 69

हिन्दी बाल साहित्य में जीवनी, ... डॉ कुमारी उर्वशी / 71

हिन्दी उपन्यासों में संस्कृति.... डॉ. कल्याण कुमार झा / 75

जनजातीय साहित्य और रमणिका... डॉ. नूतन कुमारी / 78

दलित साहित्य की अवधारणा एवं परंपरा अविनाश रंजन / 83

कुम्हार का जीवन–संघर्ष और जीवन ... रितु होता / 86

प्रेमचंद के कहानियों में कथ्यगत.... डॉ. साक्षी शालिनी / 89

प्रभा खेतान के उपन्यासः एक विवेचन अनामिका / 92

उत्साहःलोक–चित्त–आनंद .... डॉ. राकेश कुमार सिंह / 97

प्रियप्रवास में प्रकृति चित्रण डॉ. मंजुला दास /100

कुछ चुनिंदा शेर

कौन आएगा यहाँ कोई न आया होगा
मेरा दरवाज़ा हवाओं ने हिलाया होगा। – कैफ भोपाली

चाहे सोने के फ्रेम में मढ़ दो
आईना झूठ बोलता ही नहीं। –कृष्ण बिहारी नूर

रात का इंतज़ार कौन करे
आजकल दिन में क्या नहीं होता। – डॉ. बशीर बद्र

हर फ़ैसला होता नहीं सिक्का उछाल के
ये दिल का मुआमला है ज़रा देख भाल के।–उदय प्रताप

बेवजह दिल पे कोई बोझ न भारी रखिये
ज़िंदगी जंग है इस जंग को जारी रखिये। –डॉ. उर्मिलेश

चलने को एक पाँव से भी चल रहे हैं लोग
पर दूसरा भी साथ दे तो और बात है। –डॉ. कुंवर बेचैन

आया खिलौने वाला मजबूर बाप रोया
उंगली छुड़ा रहे थे बच्चे मचल मचल के। –अनु सपन

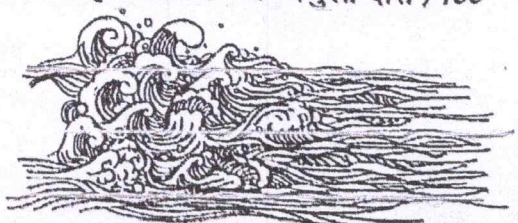

JOURNAL No.: 41060 ISSN 2456-8775

शोध आलेख

प्रेमचंद के कहानियों में कथ्यगत वैशिष्ट्य

• डॉ. साक्षी शालिनी

मुंशी प्रेमचंद का जन्म एक साधारण परिवार में, लमही नामक गाँव में 31 जुलाई 1880 ई. को हुआ था। ट्यूशन कर करके उन्होंने मैट्रिक पास किया और फिर बकायदा स्कूल-मास्टरी का दौर चला, जो चुनार से शुरू हुआ। इलाहाबाद, कानपुर, गोरखपुर, तमाम जगहों में तबादले होते रहे। प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी की एक ऐसी परंपरा का विकास किया, जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। आगामी एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचंद ने साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा सूधी संपादक थे।

हिन्दी गद्य विधाओं में 'कहानी' सबसे सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है। आज कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में सर्वाधिक हैं। यही कारण है कि पत्र-पत्रिकाओं में कहानियों की माँग सर्वाधिक है। वास्तव में कहानी में जीवन के किसी एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। कहानी की मूल आत्मा 'एक संवेदना या एक प्रभाव' है। कहानी का प्रमुख उद्देश्य भी कम-से-कम शब्दों में उस प्रभाव को अभिव्यक्त करना मात्र है। प्रेमचंद के 'बलिदान' कहानी में यह बताया गया है कि मनुष्य की आर्थिक अवस्था का सबसे ज्यादा असर उनके नाम पर पड़ता है। इस कहानी में आर्थिक से स्थिति जो व्यक्ति मजबूत हो जाता है, तो उस व्यक्ति के नाम में बदलाव आ जाता है। इस कहानी को लेकर यह भी कहा गया है कि कुछ गात इस कहानी के ऐसे हैं कि पहले जिनका आर्थिक स्थिति मजबूत था लेकिन बाद में जब उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है फिर भी उसका अकड़ चाल-बाल में स्वाभिमान भरा हुआ रहता है। ऐसे व्यक्तियों पर काल की गति का प्रभाव नहीं पड़ता है। रस्सी जल गई, पर बल नहीं टूटा। भले दिन मनुष्य के चरित्र पर, सदैव के लिए अपना चिन्ह छोड़ जाते हैं। इस कहानी में पूँजीपति वर्ग के लोग सर्वहारा वर्ग के लोग पर जबरदस्ती करते हैं और उन्हें पीछे की ओर धकेलना चाहते हैं। इन बातों से यह पंक्ति द्रष्टव्य है-

"ओंकारनाथ - 'नहीं, जरूर जोतो, खेत तुम्हारे हैं। मैं तुमसे छोड़ने को नहीं कहता हूँ। हरखू ने उसे बीस साल तक जोता। उस पर तुम्हारा हक है। लेकिन तुम देखते हो अब जमीन की दर कितनी बढ़ गई है। तुम आठ रूपये बीघा पर जोतते थे, मुझे दस रूपये मिल रहे हैं और नज़राने के रूपये सो अलग। तुम्हारे साथ रियायत करके लगान वही रखता हूँ, पर नजराने के रूपये तुम्हें देने पड़ेंगे।'"[1]

प्रेमचंद की कहानी 'बूढ़ी काकी' में बूढ़े व्यक्ति की इच्छा को दर्शाया गया है। बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। इस कहानी की मुख्य नायिका बूढ़ी काकी है, जिनमें जिह्वा-स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही। इस बदलते समाज में बुजुर्ग लोग उपेक्षित होते जा रहे हैं। जिस माँ-बाप ने अपने बच्चे को इतने स्नेह और प्यार से पालन-पोषण करते हैं, तब वही बच्चे लोग बड़े होकर माँ-बाप को घर से उपेक्षित कर देते हैं। अपने माँ-बाप को दूसरे के सहारे छोड़ देते हैं। ठीक इसी तरह 'बूढ़ी काकी' कहानी में बूढ़ी काकी के तरुण बेटे भी चल बसे थे और पति भी चल बसे थे। बूढ़ी काकी का देखभाल उनका भतीजा करता था। देखभाल के बदले में उनका सारा सम्पत्ति ले रखा था। सम्पत्ति अपने नाम लिखाते समय खूब लम्बे-चौड़े वादे किए, लेकिन सम्पत्ति लेने के बाद बूढ़ी काकी को पेट भर भोजन भी कठिनाई से मिलता था। इन पंक्तियों से ये बातें उद्धृत हैं-

"लाडली उनका अभिप्राय समझ न सकी। उसने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठे पतलों के पास बैठा दिया। दीन, क्षुधातुर, हत-ज्ञान बुढ़िया पतलों से पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर भक्षण करने लगी। ओह दही कितनी कितनी

डॉ. साक्षी शालिनी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी,
श्रीऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम
वेदीवन कॉलेज, मधुबन, पूर्वी चम्पारण

स्वादिष्ट थी, कचौड़ियाँ कितनी सलोनी, खस्ता कितनी सुकोमल। काकी बुद्धिहीन होते हुए भी इतना जानती थी कि मैं वह काम कर रही हूँ, जो मुझे कदापि न करना चाहिए। मैं दूसरों की जूठी पत्तल चाट रही हूँ। परंतु बुढ़ापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती है।''[2]

प्रेमचंद जी 'बेटी का धन' कहानी में यह उजागर करने का प्रयास किया है कि बेटी का धन माँ-बाप को कभी नहीं लेना चाहिए। क्योंकि बेटी का धन लेने से व्यक्ति पाप का भागी बनता है। ऐसी मान्यता है हमारे समाज में कि अगर जो व्यक्ति बेटी का धन भोग करता या लेता है वह व्यक्ति हमेशा दरिद्र ही रह जाता है और पाप का भी भागी बनता है। इस कहानी का नायक सुक्खू चौधरी, जिनका गाँव में अधिक चलता है। लेकिन गाँव के जमींदार ठाकुर साहब से सुक्खू चौधरी कुछ कर्ज लिए हैं, जिसके कारण उन पर बकाया लगान की नालिश ठुक जाता है। जिसके कारण उनके घर की कुर्की जब्ती का नौबत पहुँच जाती है। इस स्थिति में उनकी बेटी सोचती है कि दादा की किस भाँति सहायता करूँ और उनके बेटे बहुओं का उसका कोई परवाह नहीं रहता है। कहा भी जाता है कि लड़कों को अपने माता-पिता से वह प्रेम नहीं होता जो लड़कियों को होता है। इन पंक्तियों से यह बात अभिव्यक्त किया जा सकता है-

"झगरू साहू 'लेखा जौ-जौ बख्शीश सौ-सौ' के सिद्धांत पर चलते थे। सूद की एक कौड़ी भी छोड़ना उनके लिए हराम था। यदि एक महीने का एक दिन भी लग जाता तो पूरे महीने का सूद वसूल कर लेते। परंतु नवरात्र में नित्य दुर्गा-पाठ करवाते थे। पितृपक्ष में रोज ब्राह्मणों को सीधा बाँटते थे। बनियों की धर्म में बड़ी निष्ठा होती है। यदि कोई दीन ब्राह्मण लड़की ब्याहने के लिए उनके सामने हाथ पसारता तो वह खाली हाथ न लौटता। भीख माँगने वाले ब्राह्मणों को, चाहे वह कितने ही संडे भुसंडे हो, उनके दरवाजे पर फटकार नहीं सुननी पड़ती थी। उनके धर्म-शास्त्र में कन्या के गाँव के कुएँ का पानी पीने से मर जाना अच्छा है।''[3]

प्रेमचंद की कहानी 'सौत' में संतान प्राप्ति की लालस को दिखाया गया है। कोई व्यक्ति कैसे संतान प्राप्ति की इच्छा को लेकर कुछ भी कर सकता है। चाहे उसे कितना ही कठिनाईयों का सामना करना पर जाए, लेकिन मनुष्य जब तक संतान प्राप्त कर नहीं लेता है तब तक हमेशा प्रयत्न में लगा रहता है। ठीक उसी प्रकार इस कहानी में पंडित देवदत्त का विवाह हुए बहुत दिन हुए, पर उनके कोई संतान न हुई, जिसके चलते देवदत्त को तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, लेकिन उनकी पत्नी गोदावरी को पुत्र प्राप्ति की इच्छा हमेशा रहता है। जिस कारण वह पति-प्रेम जैसे अनमोल रत्न का भी त्याग कर देती है और सौत की इच्छा प्रकट करती हुई देवदत्त से दूसरी शादी करने के लिए कही। लेकिन देवदत्त तो तैयार नहीं हो रहे थे, पर पत्नी के आगे झुकना पड़ा। उन्होंने दूसरी शादी तो कर ली गोदावरी के कहने पर लेकिन सौत आने के बाद गोदावरी कुछ दिन तो बहुत अच्छी तरह से सौत के साथ व्यवहार किया, लेकिन धीरे-धीरे उसके मन में सौत के प्रति घृणा होने लगी और कहा जाता है कि आदमी के अपेक्षा औरत ही किसी व्यक्ति पर जल्दी मोम की तरह पिघल भी जाती है और जल्दी ही उसके हृदय में किसी के प्रति दया भी आ जाती है। ठीक उसी प्रकार 'सौत' कहानी में गोदावरी सौत के प्रति दया करती है, लेकिन एक औरत की सबसे बुरी आदत है कि वह एक स्त्री होते हुए भी एक दूसरी स्त्री की शत्रु बन जाती है। इन पंक्तियों से इस बात को स्पष्ट किया जा सकता है-

"गोदावरी को गोमती के सभी काम दोषपूर्ण दिखाई देते थे। ईर्ष्या में अग्नि है, परंतु अग्नि का गुण उसमें नहीं। वह हृदय को फैलाने के बदले और भी संकीर्ण कर देती है। अब घर में कुछ हानि हो जाने से गोदावरी को दुख के बदले आनंद होता। बरसात के दिन थे। कई दिन तक सूर्यनारायण के दर्शन न हुए। संदूक में रखे हुए कपड़ों में फफूंदी लग गई। तेल के आचार बिगड़ गए। गोदावरी को यह सब देखकर रती-भर भी दुख न हुआ। हाँ, दो-चार जली-कटी सुनाने का अवसर अवश्य मिल गया। मालकिन ही बनना आता है कि मालकिन का काम करना भी।''[4]

प्रेमचंदजी की कहानी "इस्तीफा' में दफ्तर में कार्यरत कर्मचारी को चित्रित किया गया है। कहा जाता है कि मजदूरों को अगर आँख दिखाओ तो वह त्योरियाँ बदलकर खड़ा हो जाएगा। कुली को डाँट बताओ तो सिर से बोझ फेंक कर अपनी राह लेगा। यहाँ तक कि गधा भी कभी-कभी तकलीफ़ पाकर दुलतियाँ झाड़ने लगता है, मगर बेचारे दफ्तर के बाबू को आप चाहे आँखें दिखाएँ, या दुत्कारें, उसके माथे पर बल न आएगा। उसे अपने विकारों पर जो आधिपत्य होता है, वह शायद किसी संयमी साधु में भी न हो। खंडहर के भी एक दिन भाग्य जागते हैं, बरसात में उस पर हरियाली छाती है, प्रकृति की दिलचस्पियों में उसका भी हिस्सा है। मगर इस गरीब बाबू के नसीब कभी नहीं जागते। इसके लिए सूखा सावन है, कभी हरा भादों नहीं। यही हाल है इस कहानी के मुख्य पात्र लाला फजहचंद की, जो एक बेजबान जीव थे। दफ्तर में काम करने

वाले व्यक्ति की स्थिति एक निरीह प्राणी की तरह होता है, वह दूसरे के अधीन कार्यरत होता है। उसी तरह की हाल है फतहचंद की। साहब द्वारा अपमानित होने पर भी फतहचंद न कुछ साहब को कह सकता है और नहीं नौकरी ही छोड़ सकता है, क्योंकि उनके पीछे उनका भरा-पूरा परिवार था, जो मिट्टी में मिल जाता। लेकिन उन्हें अपने अपमानित होने का बहुत ही खेद था और कहा जाता है कि आदमी के लिए सबसे बड़ी चीज इज्जत है, जो इस पंक्ति में द्रष्टव्य है- "साहब सन्नाटे में आ गए। फतहचंद की तरफ डर और क्रोध की दृष्टि से देखकर काँप उठे। फतहचंद के चेहरे पर पक्का इरादा झलक रहा था। साहब समझ गए, यह मनुष्य इस समय मरने-मारने के लिए तैयार होकर आया है। ताकत में फतहचंद उनके पासंग भी नहीं था। लेकिन यह निश्चय था कि वह ईंट का जवाब पत्थर से नहीं बल्कि लोहे से देने को तैयार है। यदि वह फतहचंद को बुरा-भला कहते हैं तो क्या आश्चर्य है कि वह डंडा लेकर पिल पड़े। हाथा-पाई करने में यद्यपि उन्हें जीतने में जरा भी संदेह नहीं था, लेकिन बैठे-बिठाए डंडे खाना भी तो कोई बुद्धिमानी नहीं है। कुत्ते को आप डंडे से मारिए, टुकराइये, जो चाहे कीजिए, मगर उसी समय तक, जब तक वह गुर्राता नहीं। एक बार गुर्राकर दौड़ पड़े तो फिर देखे आपकी हिम्मत कहाँ जाती है। यही हाल उस वक्त साहब बहादुर का था।"[5]

प्रेमचन्द की कहानियों के विषय में चर्चित कहानीकार मार्कण्डेय ने लिखा है- "जब हम एक बार लौटकर हिन्दी कहानी की यात्रा पर दृष्टि डालते हैं और पिछले सत्तर-अस्सी वर्षों के सामाजिक विकास की व्याख्या करते हैं, तो अगर कहना चाहे तो बहुत सुविधापूर्वक कह सकते हैं कि कहानी अब तक प्रेमचन्द से चलकर प्रेमचन्द तक ही पहुँची है। अर्थात् सिर्फ प्रेमचन्द के भीतर ही हिन्दी कहानी के इस लम्बे समय का पूरा सामाजिक वृतान्त समाहित है। समय की अर्थवेत्ता जो सामाजिक सन्दर्भों के विकास से बनती है, वह आज भी बहुत साधारण परिवर्तनों के साथ जस का तस बनी हुई है।"[6]

प्रेमचन्द के बारे में यह कहा गया है कि "प्रेमचन्द मुख्यत: वर्तमान के दुख-दर्द, हार-जीत और न्याय-अन्याय की कहानी कह रहे थे।"[7]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ है। अपनी कहानियों में प्रेमचंद मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं। इस प्रकार प्रेमचंद की कहानी आज भी साहित्य के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट है।

सन्दर्भ :

1. मानसरोवर (खण्ड-1), संपादक-प्रेमचंद, प्रकाशन-मनोज पॉकेट बुक्स, संस्करण-जय माता ऑफसेट, दिल्ली, पृष्ठ-36.
2. उपरिवत, पृष्ठ-93.
3. उपरिवत, पृष्ठ-17.
4. उपरिवत, पृष्ठ-152-153.
5. उपरिवत, पृष्ठ-190.
6. फ्लैप से, प्रेमचन्द की सम्पूर्ण कहानियाँ, सुमित्र प्रकाशन, इलाहाबाद.
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र मयूर पेपर बैक्स, ए. 95, सेक्टर-5, नोएडा, दिल्ली. ■

राजेश जैन राही के दोहे

कुहरे की चादर हटी, सूरज है उद्भूत,
अंधकार को चाहिए, इसका मगर सबूत।

आपाधापी हो रही, अवसर आया हाथ।
एक चित्र उस चाहिए, राजा जी के साथ।

धड़कन को स्वीकार है, नैनों का अनुबंध।
प्रियतम तेरे प्रेम की, मुझमें बसी सुगंध।

परिभाषित होते नहीं, शब्दों से अहसास,
तू मुझ में हरदम रहे, मैं भी तेरे पास

घेरे में हैं आजकल, दिल्ली के आदेश,
हाथों में सबके दिखे, अपना अध्यादेश।

रेखांकित कैसे करूं, वीरों का बलिदान।
कलम छूटकर जा गिरी, अक्षर लहूलुहान।

तेवर काफी काम का, लेकिन रहे विवेक।
समझ-बूझ कर लीजिये, निर्णय मिलकर एक।

संपर्क: मो. 9425286241